पाश्चात दार्शनिक कांट की अनुभव निरपेक्ष संश्लेषणात्मक निर्णय की संभावना ------
---

अपने उक्त मत की स्थापना से पूर्व कांट ने यह बताने का प्रयास किया कि दो प्रकार के निर्णयों विश्लेषणात्मक और संश्लेषणात्मक में क्या अंतर है। ज्ञान सदा निर्णय के रूप में होता है। जिसमें किसी तथ्य को स्वीकार अथवा अस्वीकार किया जाता है। इसे उदाहरणों द्वारा समझा जा सकता है। "त्रिभुज एक तीन भुजाओं वाली आकृति है" अथवा "पिंड में फैलाव होता है"। इन वाक्यों में हमें विधेय द्वारा उद्देश्य के किसी नए गुण का ज्ञान नहीं होता। वरन् उन्हीं गुणों या लक्षणों का विश्लेषण होता है , जो पहले से ही उद्देश्य में निहित थे। ऐसे निर्णय को विश्लेषणात्मक निर्णय कहा जाता है।

इसके अलावा एक दूसरे प्रकार का निर्णय होता है। जैसे - सभी मनुष्य स्वभाव से स्वार्थी होते हैं। इस प्रकार के निर्णय में उद्देश्य के बाबत नई बात कही जाती है। मनुष्य का स्वार्थी होना अनिवार्य लक्षण ना होकर एक नए ढंग का ज्ञान प्रदर्शित करता है। ऐसे वाक्य जिसमें ,नई बात कही जाती है , संश्लेषणात्मक निर्णय कहलाते हैं।

कांट ने स्पष्ट किया है कि ऐसे संश्लेषणात्मक निर्णय दो प्रकार के होते हैं --
(1) - अनुभव सापेक्ष
(2) - अनुभव निरपेक्ष !

प्रथम , अनुभव की प्राप्ति के उपरांत होते हैं। जबकि द्वितीय अनुभव के पूर्व ही। प्रथम के उदाहरण स्वरूप कह सकते हैं कि कौवे काले होते हैं। इस निर्णय में कई कौओं को काला देखकर निर्णय किया गया। परंतु हम पशु शास्त्र ना जाने के कारण यह नियम नहीं बना पाते कि कौओं का काला होना किसी वैज्ञानिक सिद्धांत के कारण अनिवार्य है।

किंतु दूसरे प्रकार के निर्णय अर्थात प्रागनुभव के पूर्व किए जाते हैं। जैसे यह निर्णय की "आग में छू जाने से उंगली में जलन होने लगती है" प्रागनुभव कहा जाता है। ऐसा इसलिए

कि भूतकाल के बाबत ही नहीं ,वरन भविष्य के विषय में भी अर्थात भविष्य के अनुभव के पूर्व हम कह सकते हैं कि जब-जब उंगली का अग्नि से स्पर्श होगा , उंगली जलने लगेगी और वेदना भी होगी।

कांटा ने स्पष्ट किया है कि इस प्रकार के प्रागनुभव निर्णय के कई उदाहरण हैं। यथा - "सब पिण्डों में वजन होता है।" "प्रत्येक परिवर्तन का कारण हुआ करता है।" "7 में 5 जोड़ने से 12 हो जाता है।" ऐसे निर्णय विज्ञान के लिए बड़े काम के होते हैं। इनके द्वारा विज्ञान के सामान्य नियम स्पष्ट किए जाते हैं। इनके द्वारा मनुष्य के ज्ञान की वृद्धि होती है। भविष्य के बारे में पते की बात कही जाती है। अर्थात प्राकृतिक घटनाओं के बाबत भविष्यवाणी की जाती है और मनुष्य का प्रकृति पर आधिपत्य बढ़ता जाता है।

कांट का मानना है कि इस प्रकार के लाभकारी निर्णय गणित तथा भौतिक विज्ञान में बड़े ही उपयोगी सिद्ध हुए हैं। ऐसा ज्ञान हमें समग्रता की ओर ले जाता है। सार्वभौम और निश्चित होना इसकी विशेषताऐं है। क्योंकि हमें पता है कि ब्रह्मांड के किसी कोने में पानी में पत्थर डालने से पत्थर डूबेगा ही। आग में उंगली पड़ने पर जलन होगी ही। इस प्रकार का ज्ञान सर्वदा सार्वभौम बना रहता है। इस निर्णय द्वारा यह दावा किया जाता है कि प्रत्येक परिस्थिति में उद्देश्य और विधेय का संबंध वैसा ही बना रहेगा , जैसा निर्णय वाक्य में प्रदर्शित किया गया है। इस प्रकार का ज्ञान जो असंदिग्ध , अनिवार्य और स्पष्ट होता है , प्रागनुभव निर्णय में अभिव्यक्त होता है।

इसीलिए कांट महोदय ने यह जानने का प्रयास किया कि इस प्रकार के संश्लेषणात्मक प्रागनुभव निर्णय किस प्रकार प्राप्त किए जा सकते हैं और इसी तथ्य की खोज हेतु कांट ने अपनी ज्ञान मीमांसा का सहारा लिया।

सबसे पहले कांट हेतुजन्य संवेदन शास्त्र की ओर बढ़ते हुए लिखते हैं कि ज्ञान शक्ति को तीन अधीनस्थ विभागों में विभक्त किया जा सकता है -----

प्रथमतः "इंद्रिय प्रत्यक्ष" से संबंध रखने वाला विभाग , द्वितीयतः "समझ" से संबंध रखने वाला विभाग और तृतीयतः बुद्धि से संबंध रखने वाला विभाग।

इसी संदर्भ में कांट ने यह भी स्पष्ट किया है कि यद्यपि तीनों एक दूसरे से भिन्न है , पर तीनों में आत्म (self) के प्रकाश की अपेक्षा है। इस विवेचन में के क्रम में कांट इस मुद्दे पर आते हैं कि "ज्ञान की संभावना" क्या है ? इस प्रश्न के पुनः दो पक्ष हो जाते हैं --

प्रथम -- "इंद्रिय प्रत्यक्ष" अर्थात sensibility कैसे संभव है ? और द्वितीयतः समझ कैसे संभव है ?

कांट की यह महान उपलब्धि है कि प्रथम पक्ष का उत्तर हेतु संवेदन शास्त्र (Transcendental) अथवा प्रत्यक्ष के अधिकरण के सिद्धांत में और दूसरे पक्ष का उत्तर हेतु जन्य तर्कशास्त्र (Trancendental logic) धारणाओं और निर्णयों के सिद्धांत में दिया गया है।

इंद्रिय-प्रत्यक्ष की क्रिया , समझ की क्रिया से भिन्न है और इसी प्रकार , संवेदन शक्ति के प्रागनुभविक रूप , समझ के प्रागनुभविक रूपों से भिन्न है। संवेदनों की देश और काल में व्यवस्थित करने की क्रिया को स्वयं संवेदन नहीं कह सकते है।

इसीलिए यहां प्रश्न उठ खड़ा होता है कि संवेदनों के ऊपर-नीचे , बगल में , दूर-नजदीक आदि गुणों का बोध हमें कैसे होता है ?

इस पर विचार अत्यावश्यक जान पड़ता है। इसीलिए कांट ने स्पष्ट किया है कि , देश , अवकाश अथवा अवस्थान का ज्ञान मानव मन में पहले से ही होता है और इसी के आधार पर हम संवेदनों के बीच के , दूर-नजदीक , ऊपर-नीचे आदि संबंधों को समझ सकते हैं।

इसी प्रकार पूर्व-पश्चात आदि के सम्बंध स्वयं-संवेदनों में नहीं होते है। किंतु वे मानव-मन में प्रारंभ से ही होते है। अतः देश-काल मानव मन में स्थिर रहते है। वे प्रागनुभविक रूप अथवा शक्तियां है। जिनके अनुसार हम सब संवेदनों को ग्रहण और व्यवस्थित करते है। ये अनुभव पर आश्रित नहीं है , वरन अनुभव से पूर्व है। ये प्रत्यय नहीं हैं , वरण ये प्रत्यक्ष है। काल अन्तः -- इन्द्रिय का रूप है और देश बाह्य इंद्रिय का रूप है।

अपनी प्रागनुभविक , अनुभवातीत शुद्ध प्रत्यक्षो अर्थात देश और काल की उपयुक्त व्याख्या के बाद कांट तत्व समीक्षागत हेतु , जन्यवियोजक की व्याख्या में दिखाते हैं कि , वे कौन प्रागनुभविक प्रत्यय हैं। जिनके आधार पर पदार्थ विज्ञान के अनिवार्य तथा सार्वभौम नियमों की स्थापना की जा सकती है। अतः वे जब संवेदन शास्त्र से तर्क शास्त्र की ओर बढ़ कर "समझ" की शुद्ध धारणाओं की व्याख्या करते हैं , तो समझ कि ये धारणाएं भी अनुभव से प्राप्त ना होकर प्रागनुभव होती है। समझ अपनी अभिव्यक्ति निर्णय में करती है। समझ निर्णय का अधिकरण है , विचार करना ही निर्णय करना है। तर्क शास्त्र में पहले से ही निर्णयों की व्याख्या हो चुकी है। अतः तर्क शास्त्र के निर्णयों की तालिका के आधार पर कांट समझ भी धारणाओं की खोज प्रारंभ कर देते हैं।

निम्नलिखित 12 प्रकार के निर्णयों द्वारा अपनी खोज को एक मोशन दे पाने में कांट सफल होते हैं ----

(1) सार्वभौम निर्णय -- जैसे "सभी लोग चतुर हैं।"

(2) अपूर्ण बोधक निर्णय -- जैसे "कुछ विद्यार्थी धनवान होते हैं।"

(3) एकात्मक निर्णय -- यथा "श्री देवताहीन एक सीधा आदमी है।"

इन निर्णयों के आधार पर कांट ने तीन प्रकार के गणितीय अथवा परिमाण एवं संख्या विषयक प्रत्ययों , धारणाओं एवं विकल्पों का वर्गीकरण किया है। अर्थात (a) , (b) अनेकत्व और (c) एकता की धारणाएं

(4) विधेयात्मक -- जैसे "मनुष्य एक मरणशील प्राणी है।"

(5) निषेधात्मक निर्णय -- जैसे "सूर्य पृथ्वी के चारों ओर नहीं घूमता है।"

(6) अपरिमित निर्णय -- जैसे "काल अनन्त है।"

इन धारणाओं में गुण के प्रकार सत्ता , अभाव परिमितता के विकल्पों की अभिव्यक्ति होती है।

इस प्रकार उपर्युक्त छह धारणाओं द्वारा वस्तुओं की गणना , उनके परिणाम की नाप-तोल तथा गणित का पूर्वानुभव ज्ञान संभव हो पाता है।

(7) निरपेक्ष निर्णय -- जैसे "सोना पीला होता है।"

(8) हेतुफलाश्रित निर्णय -- जैसे "यदि वर्षा होगी ,तो जमीन भींग जाएगी।"

(9) वैकल्पिक निर्णय -- जैसे "आम खट्टे होते हैं या मीठे।"

(10) संदेहात्मक निर्णय -- जैसे "संभव है कि अल्पवृष्टि ही हो।"

(11) विधानात्मक निर्णय -- जैसे "भारत एक देश है।"

(12) अनिवार्य निर्णय -- जैसे "प्रत्येक कार्य का एक कारण होना ही है।"

इन बारह धारणाओं में से पहली छः मूल धारणाओं को कांट ने गणितीय कहा और पिछली छः मूल धारणाओं को उन्होंने गत्यात्मक कहा है। क्योंकि उनके द्वारा पदार्थों के गत्यात्मक संबंध , कारण-कार्य आदि निरूपित होते हैं।

यह मूल धारणाएं तभी मानी जा सकती है। जब हम यह भी मान लें कि हमारे मनस में निरंतरता रहा करती है। पाश्चात दर्शन में मनस और आत्मा प्रायः समनाथर्क शब्द माने जाते हैं।

इस प्रकार कांट देश और काल को ना तो वास्तविक पदार्थ मानते हैं। जैसा कि न्यूटन मानते थे और ना वे उन्हें वस्तुओं का गुण मानते हैं। लाइबनिज इन्हें वस्तुओं के गुण मानते थे। साथ ही कांट उन्हें केवल प्रत्यय मात्र भी नहीं मानते है , जैसा कि ह्यूम मानते थे , वरन वे देश और काल को अपनी तत्व मीमांसा व्याख्या तथा प्रागनुभविक व्याख्या तथा व्याख्याओं एवं प्रयासों के आधार पर , प्रत्यक्ष ही मानते हैं। उनके अनुसार वे दोनों संवेदनग्राहिता के प्रागनुभविक रूप हैं। इन्हें मान लेने पर हम ना केवल समस्त इंद्रिय प्रत्यक्षो की , वरन गणित शास्त्र के प्रागनुभविक संयोजक निर्णयों की व्याख्या कर सकते हैं।

इस संबंध में एक और तथ्य को स्पष्ट करना पड़ेगा कि मूल धारणाएं है , तो बौद्धिक होती है। तब वे प्रत्ययों पर जो उनसे भिन्न होते हैं , कैसे लगाई जा सकती है ? बौद्धिक जगत की शक्तियों का संपर्क उनसे बाह्य एवं दृश्य जगत से कैसे हो सकता है ? उनका उपयोजन संवेदनों पर कैसे हो सकता है ?

कांट के अनुसार शुद्ध मूल धारणाओं में और इंद्रिय प्रत्यक्षो में कोई समानता नहीं है। वे पूर्णतः विजातीय है। तब हम उनमें संपर्क कैसे स्थापित कर सकते हैं ? शुद्ध मूल धारणाओं और इंद्रिय प्रत्यक्षो के बीच कोई तीसरी मध्यस्था करने वाली शक्ति होनी चाहिए। यह तीसरी शक्ति कांट के अनुसार कालरूप है। Time form है , वह शुद्ध एवं इंद्रियगम्यः दोनों ही है। अतः यह काल रूप मूल धारणाओं को व्यवस्थित करता है। तब ये व्यवस्थित विकल्प संवेदनों एवं दृश्य से जगत संपर्क के योग्य हो जाते हैं। उसी ढंग से व्याख्या करते हुए कांट हमारे अनुभव निरपेक्ष संश्लेषणात्मक निर्णय की संभावना की संभाव्यता को स्पष्ट करते हैं।

----- धन्यवाद --------

डॉ मनोज कुमार
13 - 05 - 2020